© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 04 | October - December 2022

# प्रबंधकीय अर्थशास्त्र: परिचय, परिभाषा, प्रकृति, संबंध और योगदान एक समीक्षा

**Seema**
**sandhuseema8295@gmail.com**

**सार**

अर्थशास्त्र को आमतौर पर दो भागों में बांटा जाता है, मैक्रोइकॉनॉमिक्स और माइक्रोइकॉनॉमिक्स। मैक्रोइकॉनॉमिक्स संपूर्ण आर्थिक प्रणाली का अध्ययन है। व्यापक आर्थिक सिद्धांतों की मदद से कुल उत्पादन, कुल रोजगार, बेरोजगारी दर, उपभोक्ता सूचकांक और निर्यात और आयात का विश्लेषण। हालाँकि, समाचार पत्रों और टेलीविज़न में मैक्रोइकॉनॉमिक मुद्दों पर सबसे अधिक चर्चा की जाती है, अर्थव्यवस्था के सूक्ष्म आर्थिक कारक भी महत्वपूर्ण हैं। प्रबंधकीय अर्थशास्त्र को अनुप्रयुक्त सूक्ष्मअर्थशास्त्र के रूप में सोचा जाना चाहिए। यह फर्म के प्रबंधक को खेल में विभिन्न आर्थिक कारकों और फर्म पर उनके प्रभाव और प्रबंधकीय व्यवहार पर पड़ने वाले परिणामों को पहचानने में मदद करता है। यह प्रबंधक के निर्णय लेने के लिए एक बेहतर उपकरण बनाने के लिए विभिन्न आर्थिक अवधारणाओं को एक साथ जोड़ने में भी मदद करता है।

**कुंजी शब्द**: मैक्रोइकॉनॉमिक्स, माइक्रोइकॉनॉमिक्स, प्रबंधकीय अर्थशास्त्र आदि

**परिचय:**

प्रबंधकीय अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र और प्रबंधन का एक संयोजन है। प्रबंधकीय अर्थशास्त्र को व्यावसायिक अर्थशास्त्र भी कहा जाता है। वर्तमान में, प्रबंधकीय अर्थशास्त्र शब्द अधिक लोकप्रिय हो गया है और ऐसा प्रतीत होता है कि धीरे-धीरे व्यावसायिक अर्थशास्त्र शब्द का स्थान ले रहा है। एक व्यावसायिक संगठन में प्रबंधन के प्रमुख कार्यों में से एक निर्णय लेना और आगे की योजना बनाना है। निर्णय लेना उपलब्ध विकल्पों में से एक क्रिया का चयन करना है। आगे की योजना अर्थव्यवस्था में भविष्य के विकास की भविष्यवाणी करना और वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और वितरण की योजना तैयार करना है। उपलब्ध विकल्पों में से निर्णय लेना और एक विकल्प का चयन करना उत्पन्न होता है, क्योंकि उत्पादन, भूमि, श्रम, पूंजी और संगठन के कारक सीमित हैं और वैकल्पिक उपयोगों में नियोजित किए जा सकते हैं और कुछ हद तक एक दूसरे के लिए प्रतिस्थापित किए जा सकते हैं। इस प्रकार, निर्णय लेने का कार्य वांछित लक्ष्य प्राप्त करने में इष्टतम समाधान को अंतिम रूप देने में उपयोगी होता है। वांछित लक्ष्य लाभ का अधिकतमकरण हो सकता है। प्राप्त किए जाने वाले उद्देश्य के आधार पर उत्पादन,

मूल्य निर्धारण, पूंजी, कच्चे माल, श्रम आदि के संबंध में निर्णय लिया जाता है। इस प्रकार, आगे की योजना बनाना और निर्णय लेना साथ-साथ चलता है।

व्यापारिक संगठन अनिश्चितता में निर्णय लेते हैं। किसी भी समय फर्म का पूर्वानुमान या भविष्यवाणी गलत हो सकती है, क्योंकि कारोबारी माहौल घरेलू और वैश्विक नीतियों और विकास में बदलाव से प्रभावित होता है।

**प्रबंधकीय अर्थशास्त्र की परिभाषा:**

प्रबंधकीय अर्थशास्त्र निर्णय लेने में लागू होने वाला अर्थशास्त्र है। यह अमूर्त सिद्धांत और प्रबंधकीय अभ्यास के बीच की खाई को पाटने वाली अर्थशास्त्र की एक विशेष शाखा है। प्रबंधकीय अर्थशास्त्र का संबंध पसंद से है। यह उपलब्ध कई विकल्पों में से एक सर्वोत्तम विकल्प के चयन से संबंधित है।

**मैकनेयर और मरियम के अनुसार**,

"प्रबंधकीय अर्थशास्त्र में व्यावसायिक स्थितियों का विश्लेषण करने के लिए विचार के आर्थिक तरीकों का उपयोग होता है।"

स्पेंसर और सेलिगमैन

प्रबंधन द्वारा निर्णय लेने और आगे की योजना बनाने की सुविधा के उद्देश्य से व्यावसायिक अभ्यास के साथ आर्थिक सिद्धांत के एकीकरण के रूप में प्रबंधकीय अर्थशास्त्र। जैसा कि परिभाषाएँ बताती हैं, प्रबंधकीय अर्थशास्त्र वह अनुशासन है जो व्यवसाय प्रबंधन के लिए आर्थिक सिद्धांत के अनुप्रयोग से संबंधित है।

**प्रबंधकीय अर्थशास्त्र की प्रकृति:**

प्रबंधकीय अर्थशास्त्र की कुछ मुख्य विशेषताओं को इंगित करना उपयोगी होगा, क्योंकि वे प्रकृति और विषय-वस्तु पर अधिक प्रकाश डालते हैं, जो विषय को स्पष्ट रूप से समझने में मदद करते हैं। सबसे पहले, प्रबंधकीय अर्थशास्त्र प्रकृति में सूक्ष्म आर्थिक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अध्ययन की इकाई एक फर्म है; इसमें एक व्यावसायिक फर्म की समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। प्रबंधकीय अर्थशास्त्र अध्ययन की एक इकाई के रूप में संपूर्ण अर्थव्यवस्था से संबंधित नहीं है।

तीसरा, प्रबंधकीय अर्थशास्त्र यथार्थवादी है। यह आर्थिक सिद्धांत के कठिन अमूर्त मुद्दों से बचा जाता है। यह उन महत्वपूर्ण तत्वों को ध्यान में रखता है जो निर्णय लेने में उपयोगी होते हैं। चौथा, प्रबंधकीय अर्थशास्त्र सकारात्मक के बजाय प्रकृति में मानक है। प्रबंधकीय अर्थशास्त्र को फर्म के मानक सूक्ष्म अर्थशास्त्र के रूप में भी वर्णित किया गया है। दूसरे शब्दों में, यह

अर्थशास्त्र के विपरीत वर्णनात्मक के बजाय निर्देशात्मक है। दूसरी ओर, आर्थिक सिद्धांत सकारात्मक और मानक दोनों है। अर्थशास्त्र का संबंध इस बात से है कि क्या निर्णय लिए जाने चाहिए और इसमें मूल्य निर्णय शामिल हैं। अर्थशास्त्र एक फर्म के लक्ष्यों और उद्देश्यों के बारे में बात करता है और बताता है कि विभिन्न स्थितियों में इन लक्ष्यों को कैसे प्राप्त किया जाए। इसलिए, यह निर्देशात्मक और वर्णनात्मक दोनों है।

पांचवां, मैक्रो-इकोनॉमिक्स प्रबंधकीय अर्थशास्त्र के लिए भी उपयोगी है क्योंकि यह उस वातावरण की एक बुद्धिमान समझ प्रदान करता है जिसमें व्यवसाय को संचालित करना चाहिए, यह समझ एक व्यावसायिक कार्यकारी को बाहरी ताकतों के साथ सर्वोत्तम संभव तरीके से समायोजित करने में सक्षम बनाती है, जिस पर उसका कोई नियंत्रण नहीं होता है। मैक्रो-अर्थशास्त्र के महत्वपूर्ण विषय जो प्रबंधकीय निर्णय लेने में उपयोगी होते हैं, वे हैं व्यापार चक्र, राष्ट्रीय आय लेखांकन, और सरकार की आर्थिक नीतियां जैसे कि कराधान से संबंधित, विदेशी व्यापार एकाधिकार विरोधी उपाय, श्रम कानून, आदि।

**प्रबंधकीय अर्थशास्त्र और अन्य विषयों के साथ संबंध:**

प्रबंधकीय अर्थशास्त्र की प्रकृति और कार्यक्षेत्र पर प्रकाश डालने का एक और उपयोगी तरीका विषयों के साथ इसके संबंधों की जांच करना है। इस संबंध में अर्थशास्त्र, सांख्यिकी, गणित और लेखाशास्त्र विशेष उल्लेख के पात्र हैं।

**प्रबंधकीय अर्थशास्त्र और अर्थशास्त्र:**

प्रबंधकीय अर्थशास्त्र को निर्णय लेने के लिए लागू अर्थशास्त्र के रूप में वर्णित किया गया है। इसे अर्थशास्त्र की एक विशेष शाखा के रूप में देखा जा सकता है जो शुद्ध आर्थिक सिद्धांत और प्रबंधकीय अभ्यास के बीच की खाई को पाटता है।

अर्थशास्त्र के दो मुख्य विभाग हैं; सूक्ष्म अर्थशास्त्र और मैक्रो अर्थशास्त्र। सूक्ष्मअर्थशास्त्र को उस शाखा के रूप में परिभाषित किया गया है जहाँ अध्ययन की इकाई एक व्यक्ति या एक फर्म है। दूसरी ओर समष्टि-अर्थशास्त्र, प्रकृति में समग्र है और अध्ययन की एक इकाई के रूप में संपूर्ण अर्थव्यवस्था है।

माइक्रो-अर्थशास्त्र, जिसे मार्शलियन अर्थशास्त्र के लिए मूल्य सिद्धांत के रूप में भी जाना जाता है, प्रबंधकीय अर्थशास्त्र के लिए अवधारणाओं और विश्लेषणात्मक उपकरणों का मुख्य स्रोत है। वर्णन करने के लिए, विभिन्न सूक्ष्म-अर्थशास्त्र अवधारणाएं जैसे कि मांग की लोच, सीमांत लागत, छोटी और लंबी दौड़, विभिन्न बाजार रूप आदि, सभी प्रबंधकीय अर्थशास्त्र के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

समष्टि अर्थशास्त्र का मुख्य योगदान पूर्वानुमान के क्षेत्र में है। आय और रोजगार के आधुनिक सिद्धांत का सामान्य व्यावसायिक स्थितियों के पूर्वानुमान के लिए सीधा प्रभाव पड़ता है क्योंकि एक व्यक्तिगत फर्म की संभावनाएँ अक्सर सामान्य व्यावसायिक स्थितियों पर बहुत अधिक निर्भर करती हैं।

**व्यावसायिक अर्थशास्त्रियों ने भी अर्थशास्त्र के निम्नलिखित मुख्य क्षेत्रों को अपने काम में उपयोगी पाया है:**

1. मांग सिद्धांत
2. फर्म-कीमत, उत्पादन और निवेश निर्णयों का सिद्धांत
3. व्यापार वित्तपोषण
4. सार्वजनिक वित्त और राजकोषीय नीति
5. पैसा और बैंकिंग
6. राष्ट्रीय आय और सामाजिक लेखा
7. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का सिद्धांत

इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि प्रबंधकीय अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र से बहुत निकट से संबंधित है।

**प्रबंधकीय अर्थशास्त्र और सांख्यिकी:**

सबसे पहले, प्रबंधकीय अर्थशास्त्र मात्रात्मक डेटा के मार्शलिंग और निर्णय लेने में शामिल उचित कार्यात्मक संबंधों के उपयोगी उपाय तक पहुंचने की मांग करता है। उदाहरण के लिए, मांग और लागत के विचारों पर अपने मूल्य निर्धारण निर्णयों को आधार बनाने के लिए, एक फर्म को सांख्यिकीय रूप से व्युत्पन्न या गणना की गई मांग और लागत कार्य होना चाहिए।

दूसरे, प्रबंधकीय अर्थशास्त्र आर्थिक सामान्यीकरणों के अनुभवजन्य परीक्षण के लिए सांख्यिकीय विधियों को नियोजित करता है। इन सामान्यीकरणों को व्यवहार में तभी स्वीकार किया जा सकता है जब उन्हें वास्तविकता की दुनिया से डेटा के खिलाफ जांचा जाता है और मान्य पाया जाता है।

अंत में, प्रबंधकों को आमतौर पर निर्णयों को प्रभावित करने वाले चरों के बारे में सटीक जानकारी नहीं होती है और उन्हें भविष्य की घटनाओं की अनिश्चितता से निपटना पड़ता है। संभाव्यता का सिद्धांत, जिस पर सांख्यिकी आधारित है, ऐसी अनिश्चितता से निपटने के लिए तर्क प्रदान करता है।

**प्रबंधकीय अर्थशास्त्र और गणित:** गणित अभी तक एक और महत्वपूर्ण उपकरण-विषय है जो प्रबंधकीय अर्थशास्त्र से निकटता से संबंधित है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रबंधकीय अर्थशास्त्र

चरित्र में मीट्रिक है, विभिन्न आर्थिक संबंधों का अनुमान लगाता है, प्रासंगिक आर्थिक मात्राओं की भविष्यवाणी करता है और निर्णय लेने और आगे की योजना बनाने में उनका उपयोग करता है। ज्यामिति, त्रिकोणमिति और बीजगणित का ज्ञान न केवल आवश्यक है, बल्कि कुछ गणितीय उपकरण और अवधारणाएं जैसे लघुगणक और घातांक, वैक्टर, निर्धारक और मैट्रिक्स बीजगणित और सबसे ऊपर, कलन, अंतर और साथ ही अभिन्न, दासी हैं। इसके अलावा, संचालन अनुसंधान जो प्रबंधकीय अर्थशास्त्र से निकटता से संबंधित है, प्रकृति में गणितीय है। यह डेटा प्रदान और विश्लेषण करता है और मॉडल विकसित करता है, विभिन्न विषयों, जैसे मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, सांख्यिकी और इंजीनियरिंग से लिए गए विशेषज्ञों के अनुभवों से लाभान्वित होता है।

**iv. प्रबंधकीय अर्थशास्त्र और लेखा:**

प्रबंधकीय अर्थशास्त्र भी लेखांकन से निकटता से संबंधित है जो एक व्यावसायिक फर्म के वित्तीय संचालन को रिकॉर्ड करने से संबंधित है, वास्तव में, लेखांकन जानकारी एक प्रबंधकीय अर्थशास्त्री द्वारा अपने निर्णय लेने के उद्देश्य के लिए आवश्यक डेटा के प्रमुख स्रोतों में से एक है।

उदाहरण के लिए, एक फर्म का लाभ और हानि विवरण बताता है कि फर्म ने कितना अच्छा किया है और इसमें मौजूद जानकारी का उपयोग प्रबंधकीय अर्थशास्त्री द्वारा भविष्य की कार्रवाई पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालने के लिए किया जा सकता है - चाहे उसे सुधार करना चाहिए या बंद करना चाहिए। बेशक, लेखांकन डेटा सावधानीपूर्वक व्याख्या, पुनर्रचना और समायोजन के लिए कॉल करता है, इससे पहले कि वे सुरक्षित और प्रभावी ढंग से उपयोग किए जा सकें।

यह इस संदर्भ में है कि प्रबंधन लेखांकन और प्रबंधकीय अर्थशास्त्र के बीच बढ़ती कड़ी विशेष उल्लेख के योग्य है। प्रबंधन लेखांकन का मुख्य कार्य अब उस प्रकार के डेटा प्रदान करने के रूप में देखा जाता है जिसकी प्रबंधकों को आवश्यकता होती है यदि वे व्यावसायिक समस्याओं को सही ढंग से हल करने के लिए प्रबंधकीय अर्थशास्त्र के विचारों को लागू करना चाहते हैं; लेखांकन डेटा भी एक रूप में प्रदान किया जाना चाहिए ताकि प्रबंधकीय अर्थशास्त्र की अवधारणाओं और विश्लेषण में आसानी से फिट हो सके।

**प्रबंधकीय अर्थशास्त्र और संचालन अनुसंधान:**

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान और उसके बाद के वर्षों में, अवज्ञा और बुनियादी उद्योगों में योजना और संसाधन आवंटन की जटिल परिचालन समस्याओं को हल करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ-साथ अन्य पश्चिमी देशों में अंतःविषय अनुसंधान का एक अच्छा सौदा किया गया था।

गणितज्ञ, सांख्यिकीविद्, इंजीनियर और अन्य लोगों ने एक साथ मिलकर मॉडल और विश्लेषणात्मक उपकरण विकसित किए जो तब से एक विशेष विषय में विकसित हो गए हैं जिसे ऑपरेशन रिसर्च (OR) के रूप में जाना जाता है। तकनीकों और अवधारणाओं का अधिकांश विकास, जैसे रैखिक प्रोग्रामिंग, इन्वेंट्री मॉडल, गेम थ्योरी, आदि, संचालन शोधकर्ताओं के काम के कारण है।

**निष्कर्ष:**

निष्कर्ष निकालने के लिए, प्रबंधकीय अर्थशास्त्र कुछ विषयों, जैसे, अर्थशास्त्र, सांख्यिकी, गणित और लेखा से निकटता से संबंधित है। एक प्रशिक्षित प्रबंधकीय अर्थशास्त्री इन सभी विषयों की अवधारणाओं और विधियों को एक फर्म की व्यावसायिक समस्याओं को सहन करने के लिए लाता है। विशेष रूप से, संचालन अनुसंधान और प्रबंधन लेखांकन प्रबंधकीय अर्थशास्त्र के बहुत करीब आ रहे हैं, और उनके एकीकरण की ओर एक रुझान प्रतीत होता है।

प्रबंधकीय अर्थशास्त्र की उपयोगिता आर्थिक सिद्धांत से टूलकिट को उधार लेने और अपनाने में निहित है, बेहतर व्यावसायिक निर्णय लेने के लिए अन्य विषयों से प्रासंगिक विचारों को शामिल करना, विभिन्न कार्यात्मक विभागों/विशेषज्ञों द्वारा निर्णय लेने के दौरान एक उत्प्रेरक एजेंट के रूप में कार्य करना। फर्म के स्तर पर और अंत में सामाजिक दायित्वों के प्रति व्यावसायिक निर्णयों को उन्मुख करके एक सामाजिक उद्देश्य को पूरा करना।

**संदर्भ**

[1] आत्मानंद, एक्सेल बुक्स द्वारा प्रबंधकीय अर्थशास्त्र।

[2] डीएम मिठानी द्वारा प्रबंधकीय अर्थशास्त्र, हिमालय पब्लिशिंग हाउस

[3] इवान पिंग और डेल लेहमैन, ब्लैकवेल पब्लिशिंग द्वारा प्रबंधकीय अर्थशास्त्र

[4] फर्म की प्रकृति', आर.एच. कोसे द्वारा, इकोनॉमिका, नवंबर 1937।